सम्पूर्ण आजादी का दस्तावेज

# डाईवर्सिटी

## इयर बुक : 2020

डाइवर्सिटी : जिसकी जितनी संख्या भारी-उसकी उतनी भागीदारी : शासन-प्रशासन सहित देश के कारोबार में सवर्ण-ओबीसी-एससी/एसटी और धार्मिक अल्पसंख्यकों की संख्यानुपात में भागीदारी *

सरकारी और निजीक्षेत्र की सभी स्तर की नौकरियों; वस्तुओं की सप्लाई व डीलरशीप; ठेकों-पार्किंग-परिवहन; फिल्म-टीवी के सभी प्रभागों; शिक्षा एवं ज्ञान के क्षेत्र.....




संपादक

एच.एल. दुसाध

सह-संपादक

डॉ. कौलेश्वर प्रियदर्शी-डॉ. कविश कुमार

# मिशन डाइवर्सिटी 2020

एच. एल. दुसाध

डाइवर्सिटी फॉर इक्वालिटी ट्रस्ट
लखनऊ

प्रथम संस्करण : 2021

द्वितीय संस्करण : 2024

प्रकाशक : **डाइवर्सिटी फॉर इक्वालिटी ट्रस्ट**
डाइवर्सिटी हाउस, 2/1467,
आदिल नगर, कल्याणपुर, लखनऊ-226022
E-mail : hl.dusadh@gmail.com
मो. : 9654816191

© **डाइवर्सिटी ट्रस्ट**

**मूल्य : 1200/- रुपये**

| | | |
|---|---|---|
| **रचना** | : | **मिशन डाइवर्सिटी-2020** |
| **लेखक** | : | एच.एल. दुसाध |
| **आवरण** | : | कम्प्यूटेक सिस्टम |
| **शब्दांकन एवं मुद्रण** | : | क्विक ऑफसेट, दिल्ली-94 |

**समर्पण**

*मिनी आंबेडकर के रूप*
*में आकार ले रहे* ***डॉ. जनमेजय कुमार***
*को सादर*

# प्रस्तावना

एच.एल. दुसाध का व्यक्तित्व और लेखन इतना वैविध्यपूर्ण है कि वे खुद डाइवर्सिटी के मूर्त रूप प्रतीत होते हैं। विगत वर्ष जब महामारी के कारण सब कुछ ठप्प पड़ गया था, तब भी उनका लेखन जारी था। बल्कि सामाजिक डॉक्टर के तौर पर वे डॉक्टरों की तरह उस संकट काल में ज्यादा ही सक्रिय रहे। उनकी उसी सार्थक सक्रियता का उत्स यह पुस्तक आपके हाथों में है।

छोटी से छोटी घटना को इनकी पारखी नजर सिर्फ दर्ज ही नहीं करती, बल्कि अपने मौलिक अंदाज से विश्लेषित करती है। यही इनके लेखन की खासियत है। जहां ज्यादातर विद्वान घटनाओं की व्याख्या करते हैं और व्यख्या करते हुए अपनी बात को ही घटना बना देते हैं। इस तरह एक मिथ या हाइपर रियलिटी रचते हैं। दुसाध साहेब समय और समाज का वस्तुनिष्ठ और वैज्ञानिक विश्लेषण करते हैं।

बाबा साहेब डॉ. अंबेडकर ने कहा था कि भारत में विद्वान तो बहुत हैं परंतु बौद्धिक नगण्य हैं। बाबा साहेब की परिभाषा पर खरे उतरने वाले दुर्लभ बौद्धिकों में मूर्धन्य हैं दुसाध साहेब, क्योंकि ये चीज़ों को उनके अन्तरसम्बधों के साथ देखते है। उन्हें अलग-थलग देखते हुए जानकारियों की ढ़ेर नहीं लगाते वरन् अपनी मेधा और गहरी अंतर्दृष्टि से उसे सार्थक ज्ञानराशि में रूपांतरित करते हैं। वैसे तो उनकी सारी पुस्तकें ही उनकी इस ज्ञानोत्पादन की विलक्षण क्षमता का प्रमाण हैं, उसी क्रम में यह पुस्तक उनके चीज़ों के विश्लेषण फिर विघटित अवयवों के पुनः सार्थक संश्लेषण की अनूठी शैली का जबरदस्त मिसाल है।

कोरोना काल के लॉकडाउन की बात करते हुए वे नोटबन्दी को नहीं भूलते। साथ ही इस अंधेरे समय की मायूसी और भयावहता को दर्ज करते हुए उन्हें सिर्फ नँगे पैर भागते मजदूर ही परिलक्षित नहीं होते अपितु जिजीविषा और पितृप्रेम की साक्षात मूर्ति ज्योति पासवान की ज्योति भी इस अंधेरे समय को चीरती उन्हें दिखती है।

उनके एक तरह से हर गुजर रहे पल में दर्ज सभ्यता के चिन्हों की पहचान करती समीक्षा है। यूँ तो यह पुस्तक समकालीन विषयों पर एक समाज वैज्ञानिक

दार्शनिक अर्थशात्री बहुविज्ञ की टिप्पणी है पर, जरा सी भी अन्तर्दृष्टि रखने वाला व्यक्ति देख सकता है कि कैसे यह अरस्तू द्वारा बताए काव्य की जरूरत संकलनत्रयी को निर्वाह करती है। वे समकाल और देश को सर्वकाल और सार्वभौम से जोड़ देते है। पूरा विश्व और पूरा इतिहास–समय काल बिंदु के एक पल में घट रहे से घटना से जुड़ जाता है। दुसाध कोरोना काल मे डॉक्टरों की भूमिका रेखांकित करते हुए फ्लोरेंस नाईटेंगल तक जा पहुचते हैं और उस महान महिला के मानवीय योगदान को वर्तमान कर देते हैं।

महामारी से निपटने में विज्ञान की भूमिका को बताते हुए वह गैलेलियो कोपरनिकस तक जा पहुचते हैं।

किन्तु वह विज्ञान को सिर्फ भौतिक विज्ञान तक सीमित नहीं रखते बल्कि उसे जीव विज्ञान में हार्वे और फ्रांकास्टोरो आदि के योगदान की क्रांतिकारी भूमिका तक प्रसारित कर देखते हैं और देखते हुए सिर्फ उपयोगितावादी दृष्टि तक महदूद नहीं रहते। दैवी सिद्धांत से देह को समझने के अंध विश्वास को तोड़ने में विज्ञान की वृहत्तर प्रभाव को सामने रखते हैं। ज्ञानोदय कालीन मूल्यों के विकास और आधुनिकबोध के आलोक में आज की चीज़ों को देखते-परखते हैं। यही कारण है कि विषय विशेषज्ञ की जगह यह व्यापक बौद्धिक की तरह दिक्काल पर नजर रखते हैं।

यही कारण है कि जिस वर्ण व्यवस्था को विचारक महज सामाजिक व्यवस्था के रूप में देखते आये है उसकी जड़ यानी आर्थिक अवसंरचना को वे उजागर कर पाते हैं और जाति अर्थव्यवस्था की बात करते हुए एक नई अवधारणात्मक क्रांति करते हैं। उनके ज्ञान के विस्तार को देखते हुए बरबस मीर का यह शेर याद हो आता है–

**वहदत में तेरी हर्फ ए दुइ न आ सके।**
**वह कौन है जो तेरी वुसअत को पा सके।**

इस पुस्तक की प्रस्तावना लिखते हुए मैं यह बताना चाहता हूं कि जो लोग एक मौलिक दृष्टि का साक्षात्कार चाहते हैं उन्हें, यह पुस्तक पढ़नी ही होगी। यह एक अनिवार्य पुस्तक है।

**–जयप्रकाश फाक़िर**

# अनुक्रम

**प्रस्तावना** 5

**लेखकीय** 17

**अध्याय-1 : मिशन डाइवर्सिटी** 21

'चौदहवें डाइवर्सिटी-डे' में शामिल सभी के प्रति अशेष आभार—23, एक खास अपील—25, **क्या दलित संविधान प्रदत अधिकार खोने जा रहे हैं!**—27, दलित समुदाय का दर्दनाक इतिहास—28, अछूत-प्रथा के प्रति निर्लिप्त रहे : भारतीय नवजागरण काल के नायक—28, दलितों के जीवन में आया चमत्कारिक बदलाव—29, डॉ. आंबेडकर के कामों को आगे बढ़ाने में व्यर्थ रहे : आंबेडकरवादी—30, अमूर्त मुद्दों में व्यर्थ हुई : आंबेडकरवादियों की ऊर्जा—30, **स्वदेशी जागरण मंच का नया ड्रामा**—31, सार्वजनिक उपक्रमों में हिस्सेदारी बेचने के खिलाफ है : स्वदेशी जागरण मंच—31, स्वदेशी जागरण मंच को जन्म देने पीछे : आत्मनिर्भर राष्ट्र का निर्माण!—32, स्वदेशी जागरण मंच के वजूद में आने के बढ़ी है : आर्थिक और सामाजिक विषमता—33, दिखावा है स्वदेशी जागरण मंच का विरोध—34, 2002 का इतिहास का इतिहास दोहराता : स्वदेशी जागरण मंच—35, **शक्ति के स्रोतों में सामाजिक और लैंगिक विविधता के प्रतिबिम्बन की जरूरत!**—36, बहुजन राजनीति की सबसे बड़ी समस्या है : योग्य नेतृत्व का अभाव!—36, निराशा के दौर में उम्मीद की किरण—36, जिला पंचायत के सीटों के बंटवारे में : लागू हुई डाइवर्सिटी—37, समतामूलक समाज निर्माण का अर्थ!—38, विषमता की सृष्टि का मूल कारण : शक्ति के स्रोतों का अन्यायपूर्ण बंटवारा—38, तैयार की जा सकती है : मोदी सरकार के रुखसती की जमीन—39, **क्या संघ परिवार सितम्बर-2002 का इतिहास दोहराएगा!**—40, देश की आर्थिक स्वतंत्रता के प्रति संकल्पित : स्वदेशी जागरण मंच—40, वाजपेयी के बाद संघ के निशाने पर नरेन्द्र मोदी!—41, स्वदेशी जागरण का : नागपुर घोषणापत्र—41, वाजपेयी ने शुरू किया : देश बेचने का सिलसिला—42, 2002 में वाजपेयी को बचाने का ड्रामा—43, **भोपाल घोषणा के एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए वजूद में आया : बहुजन डाइवर्सिटी मिशन**—44, भोपाल घोषणा का असर—45, कम्युनिस्ट घोषणापत्र पर भारी पड़ सकता है : बीडीएम का घोषणापत्र—45, भोपाल और बीडीएम के घोषणापत्र में मौलिक प्रभेद—46, डाइवर्सिटी से पनपने लगी है : सर्वत्र भागीदारी की चाह—47, पार्टियों के घोषणापत्रों में डाइवर्सिटी—48, सवर्ण आरक्षण के बाद उज्ज्वलतर हुई : डाइवर्सिटी की सम्भावना—48, डाइवर्सिटी पहना सकती है बहुजनवादी दलों को ताज!—49, बिहार विधानसभा चुनाव पर रहेगी : बीडीएम की निगाहें—49, **लोकतान्त्रिक क्रांति के लिए जानना जरूरी**

**है : हिन्दू कौन!**—50, हिन्दू कौन!—51, वर्ण-व्यवस्था में हिन्दू!—51, बहुजनों को अधिकार संपन्न करने में : हिन्दू धर्म और 33 कोटि देवी-देवताओं योगदान!—52, हिन्दुत्ववादियों के खिलाफ लाभबंद होने के लिए : बताना होगा हिन्दू कौन!—53, कांशीराम : वर्ग संघर्ष के महानायक—54, यदि कांशीराम न होते—54, **कांशीराम : वर्ग संघर्ष के महानायक**—54, कांशीराम के उदय पूर्व : वर्ग-संघर्ष लायक हालात—55, कांशीराम के वर्ग-संघर्ष की परिकल्पना और बामसेफ—56, कांशीराम का लक्ष्य रहा : बहुजनों को धन-धरती का मालिक बनाना—57, जाति चेतना का चमत्कार—58, तब अवाम को भारतीय राज्य पर भरोसा था—59, वर्तमान हालात में क्या करते कांशीराम—59, **जरुरी है भाजपा के हेट पॉलिटिक्स की काट!**—62, सीएए : मोदी का एक और तुगलकी फैसला—62, सीएए-एनआरसी के जरिये : हेट पॉलिटिक्स की एक नई पारी का आगाज—62, हेट पॉलिटिक्स के सूत्रकार : डॉ. हेडगेवार—63, आर्य-समाज की जगह हिन्दू-समाज की परिकल्पना—63, मुस्लिम विद्वेष बना : संघ का प्रधान हथियार—64, हेट पॉलिटिक्स की काट के लिए : आर्थिक आधार पर वर्ग-संघर्ष—65, हेट पॉलिटिक्स का असल निशाना : बहुजन समाज—66

**अध्याय-2 : कोरोना काल का डाइवर्सिटी चिंतन** 67

**कोरोना : संकट की इस घड़ी में प्रभुवर्ग से प्रत्याशा!**—69, चीन से उपजा : कोरोना वायरस!—69, कोरोना के खिलाफ एकजुट होती दुनिया—69, कोरोना के खिलाफ आगे आये : रोनाल्डो!—70, क्या भारतीय सितारे भी आगे आयेंगे!—70, **कोरोना : भगवान बने डॉक्टर**—71, देवदूत बने डॉक्टर!—71, चर्चा में हैं सिर्फ डॉक्टर—72, याद आई : लेडी विद द लैम्प—73, इटली का डॉक्टर दंपति—74, इसाईत में मानव सेवा—74, **धर्म छुट्टी पर, विज्ञान ड्यूटी पर!**—75, कोरोना से उठे धर्मों पर सवाल—75, धर्म छुट्टी पर : विज्ञान डयूटी पर!—76, वैज्ञानिक क्रांति के अग्रदूत—77, धर्माधीशों के कोपभाजन बने : गैलेलियो—78, औद्योगिक क्रांति का सबब बनी : वैज्ञानिक क्रांति—78, छिन्न-भिन्न हुई : ब्रह्मांड की हजारों साल पुरानी मान्यता—79, प्रकृति की प्रतिकूलता पर जय!—80, **तो क्या कोरोना की महामारी विश्व गुरु की अनदेखी का परिणाम है!**—80, संकट में धर्म—80, हिन्दू धर्म ग्रंथों में कोरोना की भविष्यवाणी—81, विशिष्ट संहिता में कोरोना की भविष्यवाणी—82, भारतीय पराविद्या की व्यर्थता से अवगत : मोदी सरकार—83, **वैज्ञानिक क्रांति के अग्रदूत!**—83, धर्मों द्वारा फैलाये गये अन्धकार को चीरने वाले : इसाई वैज्ञानिक—84, गैलेलियो : वैज्ञानिक क्रांति के महानायक—84, न्यूटन का गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त बना : दूसरे ग्रहों में विचरण का आधार—85, औद्योगिक क्रांति के पुरोधा : जेम्सवाट!—86, मेडिकल सांइस के पुरोधा : हार्वे और फ्रांकास्टोरों—86, लियोनार्दो विन्सी : सर्वश्रेष्ठ प्रतिभा!—86, **भारतीय मनीषा का सर्वोच्च उपहार वर्ण व्यवस्था का अर्थशास्त्र**—87, गाय-गोबर-गोमूत्र का महिमा मंडन—88, भारतीय मनीषा द्वारा प्रकृति का रहस्योत्मोचन—88,

ऋषि-मुनियों का सबसे बड़ा योगदान : 33 कोटि देवी-देवताओं का आविष्कार—89, सबसे बड़ा ज्ञान : आत्म-ज्ञान!—89, शासक वर्ग के हित में प्लेटो का त्रि-वर्ग सिद्धान्त—90, वर्ण व कर्म-शुद्धता के सिद्धान्त का असर!—91 वर्ण-व्यवस्था के अर्थशास्त्र को आगे बढ़ाने में जुटे रहे : हिन्दू मनीषी—92, **हिन्दुत्ववादियों को क्यों महसूस हो रही है : परा-विद्या की जरूरत**—93, कोरोना के खिलाफ जारी है : विज्ञान का संग्राम!—93, थम नहीं रहा है : हिन्दुत्ववादियों का अभियान—93, दो विद्या : परा और अपरा!—94, क्योंकि लोगों को लगता रहा है : साधु-संत परा-विद्या से लैस हैं!—95, भारतेर साधक : भक्ति साहित्य की अद्वितीय पुस्तक!—95, लघुशंका से जेल को जलाशय में तब्दील करने वाले : संत तैलंग स्वामी—96, माँ काली के दुलारे : बामा क्षेपा—96, हनुमान और अश्वस्थामा को तपस्यारत देखने वाले : योगी श्यामा चरण लाहिड़ी—96, राम-सीता के विवाह-भोज का मजा लूटने वालेः देवराहा बाबा—97, ब्रह्मांड को तीन बार ध्वस्त करने की क्षमता से समृद्ध : संत भोलानन्द गिरि—98, हमारे परा-विज्ञान की सीमाएं!—98, क्योंकि कोरोना ने हिन्दू धर्म से मोह-मुक्त होने की प्रक्रिया शुरू कर दी है—100, **प्राचीन भारत की ज्ञान परंपरा**—100, भारतीय ज्ञान-परंपरा के सत्योन्मोचन की जरूरत—100, हिन्दू ज्ञान-परम्परा में परा-विद्या!—101, चिन्तन का सर्वाधिक अवसर मिला हिन्दू मनीषा को—101, **कोरोना से और संकटग्रस्त हो सकता है : आंबेडकरवाद!**—104, आंबेडकर जयंती पर : डॉ. एम.एल. परिहार की अपील—105, लगता है परिहारों का संदेश रंग ला रहा है—106, मंडलवादी आरक्षण बना : आंबेडकरवाद का काल!—106, मोदी-राज में संकट ग्रस्त हुआ : आंबेडकरवाद—107, कोरोना से सर्वाधिक प्रभावित : बहुजन समाज—108, **सरकारी क्षेत्र की ओर लौटने में : मोदी के समक्ष कहाँ है बाधा!**—108, कोरोना काल में दिल जीता : एयर इंडिया—108, कोरोना से जंग लड़ रहा है : सिर्फ सरकारी क्षेत्र—109, कोरोना काल में बदला है : सरकारी क्षेत्र के प्रति नजरिया—110, हिन्दू राष्ट्र की जरूरत के कारण : निजीकरण की राह पर दौड़ने की लिए मजबूर हैं मोदी—111, **कोरोना और ग्लोबल वार्मिंग से भी बड़ी समस्या है : आर्थिक और सामाजिक विषमता!**—112, सबसे बड़ी समस्या : आर्थिक और सामाजिक विषमता—113, आर्थिक और सामाजिक विषमता की सृष्टि का कारण : शक्ति के स्रोतों में सामाजिक और लैंगिक विविधता का असमान प्रतिबिम्बन!—114, समताकामियों द्वारा धार्मिक-शक्ति की उपेक्षा—114, सामाजिक-आर्थिक विषमता के खात्मे के लिए : शक्ति के स्रोतों में सामाजिक और लैंगिक विविधता का प्रतिबिम्बन—115, शक्ति के असमान बंटवारे से पैदा हुआ : क्रांतियों का सैलाब—115, शक्ति-वितरण के लिए : लोकतांत्रिक व्यवस्था—116, विविधता नीति के सहारे विषमता के खात्मे का सर्वोत्तम मॉडल : दक्षिण अफ्रीका—117, भारत के शासकों ने किया : विविधता के प्रतिबिम्बन से परहेज!—117, सामाजिक और लैंगिक विविधता की सबसे सामाजिक बड़ी दुश्मन : वर्ण-व्यवस्था!—118, अतीत और वर्तमान के शासक दल में फर्क!—119,

हिन्दू राष्ट्र के खतरे!—120, बनानी होगी विविधता लागू करवाने की रणनीति—120, **भगवान का धन किस दिन आएगा देश के काम!**—121, कोरोना काल में धन जुटाना : बड़ी चुनौती—122, धन संग्रह का स्रोत बने : देवालयों में पड़ा अकूत धन—123, टॉप 10 मंदिरों की दौलत—124, मंदिरों और बाबाओं के अकूत धन पर हमला बोला जाए!—126, **कोरोना : दिल्ली विश्वविद्यालय के शिक्षकों की एक जरूरी पहल!**—126, डीयू के शिक्षकों की अपील—127, कोरोना बम में तब्दील हो सकते हैं : लाचार मजदूर—128, कोरोना प्रभावित मजदूरों के प्रति : निर्मम है हिन्दुत्वादी सरकार—129, **लॉकडाउन : तुगलकी या सुपरिकल्पित फैसला!**—130, वर्तमान पीढ़ी की स्मृति से कभी लोप नहीं होंगे : लॉकडाउन से उपजे मार्मिक दृश्य—130, रेल की पटरियों पर : एकसाथ कटकर मरे 16 मजदूर!—131, दो-दो, चार-चार हजार रुपए देकर : ट्रकों में असुरक्षित यात्रा—131, लॉकडाउन की टाइमिंग को लेकर उठे सवाल—132, क्या यह तुगलकी फैसला था!—132, लॉकडाउन के पीछे मोदी की मंशा!—133, मोदी सरकार ने क्यों कायम कियाः श्रमिकों के प्रति संगदिली का बेनजीर दृष्टांत!—134, मोदी को था लॉकडाउन के संभावित असर का सही-सही अनुमान—138, ताकि मजदूर वर्ग कम मूल्य पर : अपना श्रम बेचने के लिए हो जाएँ बाध्य—139, **ज्योति पासवान का कारनामा : राष्ट्रीय गर्व या शर्म का विषय!**—140, ज्योति पासवान ने रचा : पितृ-प्रेम का अनुपम महाकाव्य—140, कोरोना काल में फिर सवाल उठा : हिन्दी पट्टी की बदहाली के जिम्मेवार कौन!—141, बदहाली के जिम्मेवार : सवर्ण—141, तो इसलिए सवर्णों ने हिन्दी पट्टी के विकास में रुचि नहीं लिया—142, हिन्दी पट्टी बीमारू अंचल में तब्दील होने के लिए क्यों हुई अभिशप्त—143, राज ठाकरों को मिल गया : प्रान्तवाद का खेल खेलने का अवसर—143, **इतिहास पुरुष शांति स्वरूप बौद्ध का आकस्मिक निधन**—144, ढह गया आंबेडकरी आंदोलन का एक और स्तम्भ!—144, कोरोना के समक्ष : जीवन युद्ध हार गए बौद्धाचार्य शांति स्वरूप बौद्ध!—144, शांति स्वरूप बौद्ध से मेरी पहली मुलाक़ात—145, आज भी याद आता है बौद्ध जी द्वारा कराये गए : मेरी किताबों का विमोचन समारोह—146, आदरांजलि!—151, **थैंक्स गॉड! अमेरिकी प्रभुवर्ग ने अपना विवेक बचाए रखा है**—153, अमेरिका में अभूतपूर्व नस्लीय अशांति—153, जार्ज फ्लायड की हत्या के विरोध में उमड़ा : गोरों के समर्थन का सैलाब—154, आज भी पूर्ववत है : अंकल टॉक्स केबिन का असर!—155, अमेरिकी प्रभुवर्ग की सदाशयता में गिरावट—156, मरा नहीं है : अमेरिकी प्रभुवर्ग का विवेक, 156, **चुन्नी गोस्वामी : भारतीय फुटबॉल की स्वर्णिम पीढ़ी के पर्याय**—158, इरफान और ऋषि कपूर की तरह नहीं याद किये गये : चुन्नी गोस्वामी—158, भारतीय फुलबॉल के स्वर्णिम दौर के महानायक—159, मोहन बागान से बना रहा ताउम्र रिश्ता—159, टाटा फुटबॉल अकादमी के पहले निदेशक—160, भारतीय खेल इतिहास की श्रेष्ठतम बहुमुखी प्रतिभाओं में एक—161, **क्योंकि मार्क्सवादी भी सवर्णवादी हैं!**—161, पूंजीवाद से भी ज्यादा

बर्बर : सवर्णवाद–161, भारत में सज चुका है : वर्ग संघर्ष का अभूतपूर्व मंच–162, शिखर छू चुकी है : सापेक्षिक वंचना–163, क्योंकि भारत के मार्क्सवादी हैं : सवर्णवादी–164, **बहुजनवाद के पहले सिद्धांतकार : महात्मा फुले**–165, फुले : आधुनिक भारत के महानतम शूद्र–165, ब्राह्मणशाही से टक्कर–165, शिक्षा व समाज सुधार के क्षेत्र में क्रांतिकारी योगदान–166, भारतभूमि पर वर्ग संघर्ष की परिकल्पना–167, सामाजिक न्याय का मूलमंत्र बनी : गुलामगिरी–168, **मोदी सरकार की दूसरी पारी के एक साल पूरे होने पर मेरी एक अपील!**–169, दुसाध की अपील–169, भाजपा विरोधी 9 किताबें–171, **भारत के सवर्ण क्यों नहीं अदा कर सकते : अमेरिकी प्रभुवर्ग की भूमिका!**–172, पुलिस सुधारों की घोषणा के लिए बाध्य हुए : डोनाल्ड ट्रम्प–173, एक और नस्लीय हत्या–173, फ्लॉयड को न्याय दिलाने के अभियान में शामिल हुये : विश्वविख्यात एक्टर-स्पोर्ट्समैन!–174, जबतक हिन्दू धर्म का वजूद है : सवर्ण कभी नहीं अवतरित हो सकते अमेरिकी गोरों की भूमिका में!–180, **बहुजनों में पैदा करनी होगी : सर्व-व्यापी आरक्षण की उत्कट चाह!**–180, आरक्षण का देश : भारत–180, आरक्षण का कोई अर्थ नहीं : नितिन गडकरी–181, आरक्षण की इस दुर्दशा के लिए ज़िम्मेवार है : उच्च वर्ण हिंदुओं की हिन्दू धर्म निर्मित सोच!–181, संघी हिंदुओं में शूद्राति-शूद्रों के आरक्षण के प्रति ज्यादा घृणा–182, सर्वव्यापी आरक्षण के जोर से ही भारतीय शासकों के खिलाफ लड़ी जा सकती है : गुलामी से मुक्ति की लड़ाई!–184, गुलामी से मुक्ति के लिए लड़नी होगी : सर्व-व्यापी आरक्षण की लड़ाई–185 **मुक्ति की लड़ाई में उतरने से भिन्न : मोदी ने बहुजनों के समक्ष नहीं छोड़ा है कोई विकल्प!**–186, मोदी से नाउम्मीद हुए : बहुजन–186, तो इसलिए नहीं उठ रही है : आजादी की लड़ाई में उतरने की आवाजें–186, मोदी राज में पैदा हुआ : विषमता का शिखर–187, सर्विस सेक्टर पर सवर्णों का 90% कब्जा–188, होश उड़ा देगा : नौकरशाही के निर्णायक पदों पर सवर्ण वर्चस्व–189, शक्ति के स्रोतों पर सवर्णों जैसा वर्चस्व किसी का भी नहीं–190, **राम मंदिर का भूमि पूजन : हेडगेवार जीते, कांशीराम हारे!**–190, एक नए ऐतिहासिक दिवस के रूप में चिन्हित होने जा रहा है : 5 अगस्त!–190, प्रधानमंत्री मोदी ही रखेंगे : राम मंदिर की आधारशिला!–191, कांशीरामवाद से विचलन का परिणाम : राम मंदिर और भाजपा की सत्ता–195, काश! लालू यादव से प्रेरणा लिए होते : मायावती और अखिलेश–196, नए सिरे से धार देना होगा कांशीरामवाद को!–196, **एक अपील रवीश कुमार के नाम!**–197, **हम अब पब्लिक लाइफ में सिर्फ काली पोशाक में दिखेंगे**–199, मोदी ने किया : 15 अगस्त से 5 अगस्त की तुलना–200, रामजन्म भूमि मुक्ति अभियान के पीछे : आरक्षण के खात्मे की चेतना–200, सामाजिक न्याय की कब्र पर हुआ : राम मंदिर का भूमि पूजन–200, **अयोध्या की समृद्धि में क्या गैर-सवर्ण भी होंगे हिस्सेदार!**–202, मोदी-योगी ने दिखाया : अयोध्या के विकास का सपना–202, क्या अयोध्या

के विकास में बहुजन भी हिस्सेदार होंगे!—203, अयोध्या में ध्वस्त हो सकते हैं : बहुजनों के पुराने व्यवसायिक प्रतिष्ठान—204, इन कारणों से घटित हो सकता है अपवाद!—205, **संतों ने किया अगली लड़ाई का शंखनाद!**—205, राम मंदिर से आगे!—205, संत कर रहे हैं धार्मिक रक्तपात की तैयारी- प्रो. अजय तिवारी—206, भाजपा की सफलता के पृष्ठ में : गुलामी के प्रतीकों के मुक्ति की पटकथा—207, जाति/वर्ण की चिरपरिचित दुर्बलता के शिकार : साधु-संत—208, गुलामी के प्रतीकों के खड़े होने के लिए ज़िम्मेवार : परजीवी साधु-संत!—208, मण्डल की रिपोर्ट के बाद : चैतन्य हुये साधु-संत—209, **मीडिया बिकाऊ है, यह चालू धारणा दिमाग से निकाल दें!**—210, पत्रकारिता : सर्वोच्च स्तर का बौद्धिक कर्म—210, सत्ता के गुलाम नहीं हैं : सवर्ण पत्रकार—211, एक है मीडिया और मोदी का स्वार्थ!—211, **स्वाधीनता की 74 वें सालगिरह पर : बहुजनों के समक्ष आज़ादी की लड़ाई में उतरने से भिन्न नहीं है कोई विकल्प!**—217, हिन्दू राष्ट्र के आईने में : बहुजनों के लिए और जरूरी हो गया है आज़ादी की लड़ाई में उतरना!—218, मोदी राज में हो रहा है : भारत का रियासतीकारण!—218, बहुजन मुक्ति की लड़ाई का मॉडेल बने : रूस-चीन नहीं, दक्षिण अफ्रीका!—219, आरक्षण पर संघर्ष के गर्भ से निकली : सर्वव्यापी आरक्षण वाली डाइवर्सिटी—226, बीडीएम का एजेंडा—227, बीडीएम की सीमाबद्धता—227

**अध्याय-3 : कोरोना काल में साहित्य चर्चा** **229**

'द काउंट ऑफ मोंटे क्रिस्टी' : साहित्य के नौ रसों के लिहाज से सर्वश्रेष्ठ कृति है—1—231, करोड़ों में क्यों खेलते हैं वेस्टर्न साहित्यकार—2—233, जे. के. रोलिंग : लेखन की दुनिया की पहली अरबपति—3—234, वेस्टर्न लेखकों की सफलता का राज—235, विज्ञान कथा के सम्राट : जुले वर्न!—4—236, अगाथा क्रिस्टी : जासूसी उपन्यासों की साम्राज्ञी—5—237, आर्थर कानन डायल का शर्लक होम्स : दुनिया का सबसे ज़हीन जासूस—6—238, जेम्स बॉन्ड जैसा कोई नहीं—7—239, एडगर एलन पो : गोथिक शैली के पहले साहित्यकार—8—239, फ्रैंकेंस्टाइन : विश्व इतिहास का पहला कालजयी हॉरर उपन्यास—9—240, फ्रैंकेंस्टाइन के बाद हॉरर की दुनिया का एक और अमर चरित्र : ब्राम स्टोकर का ड्राकुला—10—241, अंडरवर्ल्ड की विस्मयकर दुनिया को सामने लाया : द गॉडफादर—11—242, मानवता के इतिहास के सर्वोत्तम युद्ध की जमीन तैयार करने वाली लेखिका : हैरियट स्टो—12—243, हैरियट स्टो की भूमिका में अवतरित न हो सके : भारत के प्रभुवर्ग के साहित्यकार—245, हैरियट ने साबित किया : सवर्ण भी लिख सकते हैं दलित साहित्य—247, दास-प्रथा से बदतर : अछूत—प्रथा!—247, सवर्ण साहित्यकारों में प्रतिभा तो रही, पर हैरियट जैसा हृदय नहीं!—247, गॉन विद द विंड : अमेरिकी गृह-युद्ध पर रचित मारग्रेट मिचेल की बेमिसाल कृति—13—248, गॉन विद द विंड : हॉलीवुड की बेहद यादगार

रचना–248, मिशेल को अपनी दादी से मिली : गॉन विद द विंड की सामग्री–249, सवर्ण साहित्यकार : हैरियट स्टो नहीं, मारग्रेट मिशेल के भारतीय संस्करण!–250, लॉकडाउन से उपजे हालात में सृष्ट हो सकता है : 21वीं सदी का एक्सोडस!–14–251, एना फ्रैंक : द डायरी ऑफ एना फ्रैंक की अमर रचनाकर!–15–254, सोजे वतन : क्यों है प्रगति व मानवता-विरोधी रचना!!–161–256, अब तो नए सिरे से पढ़ना पड़ेगा; सोजे वतन!–256, सती की राख : दुनिया की बेश कीमती चीज!–257, यही है मेरा वतन : साधु-संतों वाला भारत–258, हिन्दू धर्म-संस्कृति में गहरी आस्था का उत्पाद : सोजे वतन–258, हिन्दू साहित्यकारों के लिए : हिन्दू धर्म-संस्कृति से दुर्बलता-मुक्त होना क्यों था जरूरी!–259

**अध्याय-4 : बिहार विधानसभा चुनाव में दुसाध** **263**

मंडल उत्तरकाल में सामाजिक न्याय की ऐसी उपेक्षा कभी नहीं हुई 265
बहुजन मुक्ति के सबसे बड़े मुद्दे की अनदेखी 271
हिन्दू राष्ट्र की परिकल्पना से सावधान! 274
क्या लॉकडाउन की यंत्रणा को भूल पाएंगे बिहारवासी 277
बिहार चुनाव में सामाजिक न्याय का मुद्दा! 281
डाइवर्सिटी से मिला : सामाजिक न्याय की लड़ाई का नया तेवर! 285
विकास के नाम पर वोट करने के पहले सोचें! 294
और! तेजस्वी का तीर नहीं लगा निशाने पर! 299
चुनाव परिणाम पर दुसाध! 305

**अध्याय-5 : फेसबुक पर दुसाध** **309**

सावधान! मोदी सरकार की हर गतिविधि का लक्ष्य : शक्ति के स्रोतों पर सवर्णों का एकाधिकार है–311, संघ के खिलाफ एकांगी लड़ाई–312, लो भैया आ गयी फिर ऑक्सफैम की रिपोर्ट–312, हजार गांधी–आंबेडकर भी आज कामयाब नहीं हो पाते–डॉ. उदित राज–313, उत्साहवर्द्धन के लिए अशेष आभार Er. Brijpal bharti साहब!–314, मोदी को शर्म से डूब मरना चाहिए–315, मोदी से पूछा जाना चाहिए–315, एक ही रास्ता : सापेक्षिक वंचना का एहसास–316, बदलनी होगी : गोली की दिशा–316, विचार-शून्य लोगों की महत्वाकांक्षा का शिकार बनती : बहुजन राजनीति–317, सिंधिया-गोगोईयों ने अपना भविष्य भाजपा से जोड़ लिया है!–318, चन्द्रभान प्रसाद की आइडिया–319, कहीं ऐसा न हो हम ताली और थाली बजाने वालों को मोदी के खेमे में डालने का गुनाह कर बैठें!–320, आज ही के दिन एक लेबर के रूप में काम करने की मिली थी मुझे स्थायी निशानी!–321, विश्व इतिहास की अनूठी किताब!–322, आदि भारत मुक्ति : बहुजन समाज–322, मुबारक हो रमजान का महीना!–323, मोदी बन सकते हैं : भारत के डॉन ब्राडमैन!–324, सावधान! कोरोना प्रदत

अवसर को हिन्दू राष्ट्र में तब्दील करने की हो रही है कोशिश!—325, हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास के 5 ग्रेटेस्ट पत्रकारों में दुसाध कहाँ?—326, एक जिन्दा देवी : मायावती!—329, वर्ल्ड टॉप हैं मोदी—330, थैंक्स shelly! जी आप प्रत्याशा से आगे निकाल गईं—332, करना होगा हिन्दू शब्द का खुलकर सामना—333, चीन से टेक्नॉलजी और फाइनेंस के मुक़ाबले की सोचो—334, ब्रूस ली के देश से पार पाना है तो छोड़नी होगी : हिंदू राष्ट्र की परिकल्पना!—336, मेरे बाबूजी बृजमोहन प्रसाद!—337, सोजे वतन : क्रांतिकारी नहीं, निहायत ही प्रगति व मानवता विरोधी रचना!—339, क्या ब्लड लाइन सचमुच प्रभावी होती है?—340, हमारा मिशन!—340, अंग्रेजों के बाद दुसाध ने खंडित की : प्रेमचंद की नवाबी—342, बिलबिला उठे हैं : सवर्ण साहित्यकार—342, विशुद्ध शायराना ख्याल है : सवर्ण भी रच सकते है दलित साहित्य—343, मोदी : चैंपियन मिथ्यावादी!—343, हिन्दी पट्टी वाले होते हैं : यौन कुंठित—345, क्या दुसाध से बेहतर अंदाज में कोई बात रख सकता है!—346, चर्चित बहुजन बुद्धिजीवी Sanjay shraman jothe के पोस्ट पर मेरा कमेंट-:—348, दुसाध का एक और दावा!—349, जिसका डर था, वह सामने आ रहा है!—350, हुर्रे! ऑस्कर -2021 के वोटिंग बोर्ड के मेंबरों में शामिल हुए तीन मेरिटधारी!—351, अपराध-मुक्त भारत निर्माण का एकमेव उपाय : डाइवर्सिटी!—353, सोनिया-राहुल की सबसे बड़ी समस्या—355, भारत माता का जयगान किये जाने पर मेरा कमेंट—356, झारखंड में डाइवर्सिटी!—356, बंदे के कारण तैयार हो सकती है : वर्ग संघर्ष की जमीन—357, आ रही है मेरी : टीवी स्क्रिप्ट पर किताब—357, बर्बर सवर्ण समाज को सुसभ्य बनाने का एकमेव उपाय : डाइवर्सिटी, डाइवर्सिटी और डाइवर्सिटी!—360, काबिले तारीफ है : सवर्णो की अधिकार चेतना!—361, आन्दोलन में बाधक है : सदियों का अभाव!—362, बीडीएम के एजेंडे का पार्ट है : सेना के अधिकारियों में महिलाओं का आरक्षण—363, दिखानी होगी सॉलिडेरिटी—B.r. viplavi—364, डॉ. उदित राज को अदा करनी पड़ रही है : शत्रु खेमे में जाने की कीमत—365, बहुजनों को स्पार्टकस स्पर्श नहीं कर पाया है—366, आरक्षण से शुरू हुई आजादी की लड़ाई!—366, मुसलमानों को कोरोना जैसा वायरस सहजता से आक्रांत नहीं कर सकता!—367, क्या बहुजनों के समक्ष मुक्ति की लड़ाई में उतरने से भिन्न कोई विकल्प बचा है?—367, एक ही इलाज : डाइवर्सिटी—368, क्योंकि दलित पुरुष सबसे अधिकारविहिन मनुष्य प्राणी थे!—369, मोदी की सवर्ण-परस्त नीतियों के शिकार लोगों की सापेक्षिक वंचना के सद्व्यवहार के लिए : एक अपील रवीश कुमार के नाम!—370, सजाति संख्या-बल का कमाल!—372, बोधिसत्व राजेन्द्र चन्द्राकर : मेरे विरल गुणानुरागी—373, बहुजनों का सब कुछ खत्म होने का संकेत है : बस अड्डों की बिक्री!—374 मेरे लेख प्रकाशित/शेयर करने के लिए परमिशन की जरूरत नहीं!—375, बाबरी हास्पिटल साबित हो सकता है : बाबरी ध्वंस का बड़ा इंतकाम!—376, दलित-आदिवासी-पिछड़ों और मुसलमानों को आपसी

मतभेद भुलाकर : एक वर्ग में तब्दील होने से भिन्न कोई उपाय ही नहीं है!–376, श्री राम अयोध्या सिंह द्वारा आरक्षण को बहुजनों के लिए अनुपयोगी बताने व व्यवस्था परिवर्तन की लड़ाई में जोर लगाने की हिमायत करने पर मेरा कमेंट!–377, दुसाध की नज़रों में आज तक–378, निजीकरण का मतलब समझें–378, जीवन को सार्थक बनाने का अवसर!–379, मार्क्स और दुसाध की नजरों में : शासक वर्ग!–380, सुविधाभोगी वर्ग के नाचने-गाने वालियों का आरक्षण विरोध नया नहीं है!–380, वे बॉलीवुड में सफल इसलिए हैं–381, वकालत की डिग्री लेकर बड़ा ज्ञानी और विशिष्ट आंबेडकरवादी समझने वाले एक अति उत्साही युवा को दुसाध का सुझाव–382, मेरे बड़बोलेपन से बहुत निराश व आहत : Bilakshan Ravidas सर–382, मेरा मन कहता है सुशांत केस में राजा राममोहन राय - बंकिम- विवेकानंद की बच्ची निर्दोष बनकर उभरेगी!–384, कैसे हो संविधान के उद्देश्यों की पूर्ति!–385, मोदी ने हिंदू होने का अपना धर्म निभाया हैं!–386, दुसाध के संबोधन के सामने बेगूसराय का लौंडा!–387, वर्तमान भारत के प्राख्यात दार्शनिक थ्रुंत श्रंल के एक कमेंट पर मेरी टिप्पणी–388, जियो डॉ. सागर!–389, इतना लाजवाब गीत रचने के लिए जेएनयू के Dr. Sagar को भूरि-2 बधाई!–390, डाइवर्सिटी : बहुजन बुद्धिजीवियों ने किया निराश!–395, भविष्य का चुनावी मुद्दा : बहुजनों की मुकम्मल आज़ादी!–396, आज के हालात में आप भी बन सकते हैं : मिनी शहीद-ए-आज़म!–396, यदि भगत सिंह जेनुइन विचारक और दूरदृष्टा होते तो...–397, हिन्दुत्व-विरोधियों के लिए राहत की बात!–398, अर्नब के बजाय पूरी सवर्णवादी मीडिया को निशाने पर लें–400, क्या कांशीराम की जाति चेतना से महाबली बने बहुजन नेता शर्मसार होकर दो बूंद आँसू बहायेंगे?–401, शायद दुनिया का सबसे आत्म-मुग्ध लेखक मैं ही हूं!–402, क्या दलित मार्क्सवादी यह सत्योपलब्धि करेंगे!–403, अपने मकसद में स्टार मार्क्स से पास हुए हैं : मोदी–405, कॉमरेड तंअप चतौी के एक कमेंट पर मेरा जवाब!–405, कोरोना काल में दुसाध का संदेश!–406, विकराल असमानता के लिए दोषी : बहुजन–408, अंतर्राष्ट्रीय गरीबी दिवस पर दुसाध का संदेश!–408, मुद्दा ऐसा हो कि मंडल के लोग कमंडल फोड़ने पर आमादा हो जाएं!–408, 21वीं सदी के सबसे पिछड़े समाजों में एक : बंगाली समाज–409, अर्नब गोस्वामी को दुरुस्त करने के 3 उपाय सुझाएं–409, डॉ. जन्मेजय : एक विरल बहुजन रत्न!–410, मेरे गुरु की अद्वितीय किताब!–410, अशक्त बहुजनों को धम्म के बजाय धनी बनने का मार्ग सुझाने में सर्वशक्ति लगायें–दुसाध–411, डॉ. सागर को भूरि-2 बधाई : अलग स्वाद का एक और हिट गीत रचने के लिए!–412, मैं संघ पोषित समस्त शातिर बुद्धिजीवियों के लिए अकेले काफी हूँ–दुसाध–413, नहीं रहे इयान फ्लेमिंग के जेम्सबॉण्ड को परदे पर जीवंत करने वाले : सर सीन कॉनरी!–413, मोदी के हिन्दूवादी बोल!–414, बुद्धिज्म के प्रसार में बाधक : बुद्ध की निरिश्वरवादी छवि–415, ऋत्विक घटक

: सत्यजित राय के सबल प्रतिद्वन्दी—416, निजी संपत्ति का उन्मूलन : एक शायराना ख्याल!—416, 2050 तक भारत हो सकता है : डाइवर्सिटीमय!—417, कमला हैरिस के उपराष्ट्रपति बनने पर दुसाध की त्वरित प्रतिक्रिया!—419, अमेरिका में डाइवर्सिटि से फहराया : हिंदू मेरिट का परचम!—419, सर्दी का मौसम आज भी मेरे लिए शॉल ओढकर स्टाइल मारने का बढ़िया माध्यम है!—420, मंडलोत्तर काल में सवर्णशाही के लिए सर्वाधिक जिम्मेवार : नीतीश कुमार!—421, मेरे जीवन की पहली व बेहद खास ट्रॉफी!—422, पावर का टुकड़ा फेंकने में माहिर भाजपा!—423, बहुजनों का धार्मिक अंधत्व!—424, 25 सितंबर, 1990 से शुरू किये गए राष्ट्रवादी अभियान से नये सिरे से अवगत कराने की जरूरत!—425, वर्ण व्यवस्था की भयावहता से अंजान : सत्यजित रे!—426, मैं भी किसान हूँ—428, अलविदा ललित सुरजन सर!—429, मॉडर्न झांसी की रानी ने लिया : भगत सिंह के लोगों से पंगा—429, बाबासाहेब के मिशन को आगे बढ़ाने में व्यर्थ : आंबेडकरवादी!—430, वर्ण-व्यवस्था में दलित—430, मध्य युग के संतों से मिली : सिर्फ भावनात्मक राहत—431, आभिजात्य वर्ग के महामानव रहे : दलित समस्या से निर्लिप्त—432, डॉ. आंबेडकर के उदय पूर्व : दलितों की स्थिति!—432, आंबेडकर उत्तरकाल में दलित—433, क्योंकि मोदी सरकार भारत के ज्ञात इतिहास में सिर्फ दलित ही नहीं, प्रायः समस्त गैर-सवर्णों का सबसे बड़ा शत्रु है!—434, मंगलेश डबराल : एक विशिष्ट साहित्यकार और उससे भी बढ़कर एक बड़े इंसान—434, आज विश्व मानवाधिकार दिवस है!—435, डेमोक्रेसी की ताकत का जवाब नहीं!—435, हाँ, मैंने इंदिरा गांधी और बंग बंधु मुजीबुर रहमान को एक साथ देखा था!—437, घर के दीवारों पर हिंदू उर्फ सवर्ण राष्ट्र की दस्तक!—438, पंजाब बनाम गुजरात की शक्ल अख्तियार करता : किसान आंदोलन!—439, संकटग्रस्त होने जा रही है : भारत की सामाजिक और क्षेत्रीय विविधता!—440, ढसाल को महज एक महान कवि न समझें!—441, गायत्री मंत्र का उर्दू तर्जुमा किये जाने से उत्फुल एक प्रकांड विदुषी के पोस्ट पर मेरा कमेंट!—442, गुजराती बनियों के चौकड़ी की साजिश!—443, जारी है बहुजनों के खिलाफ : कोरोना का सद्व्यवहार—443, भाजपा के खिलाफ लड़ाई में : भरोसा ममता पर नहीं बंगाली विवेक पर—444, भरोसा सिर्फ बंगाली विवेक पर है—445, भारत के बौद्धिक अपराधी!—445, भारी असमंजस में हूँ!—446

**अध्याय-6 : दुसाध के सवाल** **447**

**प्रश्नोत्तर**—डॉ. प्रकाश ठाकुर—457, डॉ. अजय चौधरी—463, डॉ. सुनीता—466, डॉ. अनिल कुमार—468, बुद्ध शरण हंस—473, डॉ. विजय कुमार त्रिशरण—487, डॉ. जनमेजय—490, जनार्दन—498, शीलबोधी—501, मनीषा गौतम—511, अरुण कुमार पासवान—514

## लेखकीय :

मिशन डाइवर्सिटी : शक्ति के स्रोतों में सामाजिक और लैंगिक विविधता लागू करवाने के मकसद से 'बहुजन डाइवर्सिटी मिशन' की ओर से प्रकाशित की जा रही पुस्तकों की एक नयी शृंखला है। इसकी ओर से सबसे पहले 2006 से डाइवर्सिटी इयर बुक की शृंखला की शुरुआत हुई, जिसके तहत औसतन 1000 पृष्ठों की 15 वार्षिकियां अबतक प्रकाशित हो चुकी हैं। बाद में 2008 में 'तेज विकास की रोशनी से वंचित : बहुजन समाज' से आज के 'भारत की ज्वलंत समस्याएं' की शुरुआत हुई और इसके तहत 22 किताबें आ चुकि हैं। अब बहुजन डाइवर्सिटी मिशन से जुड़े कुछ खास लोगों के सुझाव पर जो नयी सीरिज शुरू की जा रही है, उसका मकसद डाइवर्सिटी मिशन को आगे बढ़ाने के लिए वर्ष भर में मेरे द्वारा किये सम्पूर्ण लेखन को एक जगह संग्रहित करके पाठकों तक पहुंचाना है। विगत दो दशकों से सिर्फ और डाइवर्सिटी पर केन्द्रित लेखन करते रहने से वंचित बहुजन समाज में पाठकों का एक खास सा वर्ग तैयार हुआ है, जो मेरी हर छोटी-बड़ी टिपण्णी चाव से पढ़ता है। यह नयी सीरिज उसी को ध्यान में रखकर प्रारंभ की जा रही है। 2020 में हमने जो छोटी-बड़ी असंख्य टिप्पणियां की : देश के मौजूदा हालात पर कुछ सवाल उठाये, वह सब इसमें पढ़ने को मिल जायेगा।

वर्ष 2020 कोरोना का वर्ष रहा, जिससे पार पाने की दिशा में राष्ट्र मार्च महीने से मुस्तैद हुआ। उससे पहले देश दिसंबर के शुरुआत से ही सीएए- एनआरसी- एनपीआर यानी नागरिकता संशोधन कानून, नॅशनल सिटिजन रजिस्टर और राष्ट्रीय जनसख्या रजिस्टर के झंझावत में फंसा रहा। यह नोटबंदी के बाद मोदी सरकार का एक ऐसा फैसला था, जिसके खिलाफ धरना-प्रदर्शनों का जबरदस्त सिलसिला शुरू हुया, जिस पर कोरोना प्रसार के बाद ही विराम लगा। इस क्रम में दिल्ली के शाहीन बाग़ में जो शांतिपूर्ण धरना चला, वह पूरी दुनिया का ध्यान आकर्षित किया। दरअसल सीएए- एनआरसी- एनपीआर के जरिये मोदी सरकार ने 'हेट पॉलिटिक्स' की एक नयी पारी का आगाज़ किया था, जिसके सीधे निशाने पर तो मुसलमान दिख रहे थे, पर असल निशाने पर थे दलित, आदिवासी और पिछड़े! इनके हितों की बात करने वाले बहुजनवादी दलों को 2024 में सत्ता आने से रोकने के दूरगामी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए ही इसके जरिये हेट पॉलिटिक्स की उस नयी पारी का आगाज़ किया गया, जिसके जोर से संघ का राजनीतिक संगठन आज देश की सत्ता पर सर्वशक्ति से काबिज है। इसकी काट ढूँढ़ना बहुत ही जरुरी है। और काट कैसे हो सकती है, इसे जानने के लिए एकाधिक बार पढ़ें पहले अध्याय का लेख ***जरुरी है भाजपा की हेट पॉलिटिक्स की काट!*** पिछले वर्ष मैंने ***'हिन्दू'*** शब्द का खूब उल्लेख किया, जिसे लेकर खुद बहुजनवादी बुद्धिजीवी तक चिंतित हुए और इसके इस्तेमाल

से बचने के लिए कईयों ने गुजारिश तक कर डाली। किन्तु इससे टकराना बहुत जरुरी है, यह जानने के लिए पहले अध्याय का लेख ***लोकतांत्रिक क्रांति के लिए जानना जरुरी हैः हिन्दू कौन!*** पढने का अनुरोध करता हूँ।

पुस्तक का दूसरा अध्याय कोरोना काल पर केन्द्रित है। कोरोना को ताली-थाली बजाकर रोकने के बाद जो लॉकडाउन का दौर चला, उसमें सारी गतिविधियाँ ठप्प हो गईं और लोग घरों में दुबक कर बैठ गए। उस दहशत भरे दौर में लिखना-पढ़ना-आसान नहीं था पर, मोदी सरकार लॉकडाउन में प्रवासी मजदूरों के साथ हृदयहीनता दिखाते हुए जिस तरह कोरोना आपदा को अवसर में बदलने की दिशा में अग्रसर हुई, उससे बतौर लेखक मुझे अपना कर्तव्य निर्वहन के लिए भूरि-भूरि लेखन करना पड़ा। इस क्रम में लॉकडाउन के एक माह पूरे होने पर ***लॉकडाउन : तुगलकी या सुपरिकल्पित फैसला*** शीर्षक से लिखा गया लेख सबसे खास रहा। इस लेख में कोरोना काल में मोदी सरकार की भूमिका पर विस्तार से जो रौशनी डाली गयी है, वह बहुत महत्वपूर्ण है। इस लेख के अतिरिक्त अन्य कई लेखों में मैंने बताया है कि मोदी सरकार ने कोरोना काल की आपदा को मुख्यतः हिन्दू राष्ट्र निर्माण के लिए एक अवसर में तब्दील करने का सफल प्रयास किया है। वास्तव में 2014 में सत्ता में आने के बाद से ही मोदी सरकार की समस्त गतिविधियाँ हिन्दू राष्ट्र निर्माण की संघ के सोच को अमलीजामा पहनाने से प्रेरित रही हैं। किन्तु इस दिशा में उसने लॉकडाउन में सारी सीमाएं तोड़ दी। इस दौर में हिन्दू राष्ट्र की परिकल्पना को मूर्त रूप देने के लिए जहाँ एक ओर निजी क्षेत्र के हाथों में सारा कुछ देने काम हुआ हुआ, वहीं बहुजनों को उस स्थिति में लाने का प्रयास हुआ हुआ, जिसका निर्देश हिन्दू धर्म शास्त्रों में दिया गया है। ऐसा करते हुए बहुजनों को उस स्टेज में पहुंचा दिया गया है, जिस स्टेज में सारी दुनिया में ही वंचित वर्गों को आज़ादी की लड़ाई संगठित करनी पड़ीं। आज बहुजनों के समक्ष अपनी मुक्ति की लड़ाई में उतरने से भिन्न और कोई उपाय ही नहीं है। किन्तु बहुजन अपनी मुक्ति की लड़ाई कैसे लड़ें, यह एक यक्ष प्रश्न बन गया है। इस प्रश्न से जूझने का बलिष्ठ प्रयास अध्याय दो के इन तीन लेखों में हुआ है- ***बहुजनों में पैदा करनी होगी : सर्वव्यापी आरक्षण की उत्कट चाह, मुक्ति की लड़ाई में उतरने से भिन्न : मोदी ने बहुजनों के समक्ष नहीं छोड़ा है कोई विकल्प, स्वाधीनता की 74वें सालगिरह पर : बहुजनों को आजादी की लड़ाई में उतरने के सिवाय नहीं है कोई विकल्प!***

सितम्बर 1990 से मंडलवादी आरक्षण के विरुद्ध जो राम जन्मभूमि मुक्ति आन्दोलन छेड़ा गया, उसमें संघ परिवार को सफलता मिली और कोरोना काल में जब लोग घरों में दुबके पड़े थे, राम के नाम पर अयोध्या में बनने वाले मंदिर का भूमिपूजन प्रधानमंत्री मोदी के हाथों हो गया। भूमि पूजन के बाद कहा जा रहा है कि राम मंदिर के बनने के बाद अयोध्या का अर्थतंत्र बदल जायेगा। यहाँ हर क्षेत्र में नए अवसर बनेंगे : हर क्षेत्र में अवसर बढ़ेंगे! पर, जो रामनगरी व्यवसायिक गतिविधियों का बड़ा

केंद्र बनने जा रही है, उसमें क्या गैर-सवर्णों को भी अवसर मिलेगा? इस बड़े सवाल से टकराने का प्रयास दूसरे अध्याय के ***अयोध्या की समृद्धि में क्या गैर- सवर्ण भी होंगे हिस्सेदार*** नामक लेख में हुआ है। बहरहाल अयोध्या में राममंदिर का निर्माण शुरू होने के बाद कोई यह भ्रम न पाल ले कि राममंदिर के जरिये जिस हेट पॉलिटिक्स का आगाज किया गया था, उसका अंत हो गया है। इस भ्रम से बचने के लिए जरुर पढ़ें यह लेख—***संतों ने किया अगली लड़ाई का शंखनाद!***

नवम्बर 2020 में संपन्न हुआ बिहार विधानसभा चुनाव एक ऐसा खास चुनाव था, जिसपर सामाजिक न्याय के समर्थकों की निगाहें टिकी थी। इसमें कोई शक नहीं की बिहार चुनाव में तेजस्वी एक महानायक के रूप में उभरे। उनकी सभाओं में जेपी और वीपी सिंह को म्लान करने वाली भीड़ उमड़ी, किन्तु उनकी नैया पार न हो सकी : किनारे पर जाकर डूब गयी। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि वह बिहार विधानसभा चुनाव-2020 में अपने पिता लालू प्रसाद यादव के उस हथियार को बिल्कुल ही विस्मृत कर दिये, जिसकी जोर से उन्होंने 2015 में अप्रतिरोध्य बने मोदी को शर्मनाक हार झेलने के लिए विवश किया था। लालू प्रसाद यादव का वह हथियार था डाइवर्सिटी अर्थात सर्वव्यापी आरक्षण! हाँ, 2015 में जब मोहन भागवत ने आरक्षण के समीक्षा की बात कही, तब लालू जी कहा था, ***'तुम आरक्षण के खात्मे की बात करते हो, हम सत्ता में आयेंगे तो लोगों को हर क्षेत्र में संख्यानुपात में आरक्षण देंगे।'*** उनकी सर्वव्यापी आरक्षण से बाज़ी पलट गयी और मोदी करारी हार झेलने के लिए बाध्य हुए। तेजस्वी इस बात को चुनाव में अपने जेहन में रखें, इसके लिए बहुजन डाइवर्सिटी मिशन के पिछले स्थापना दिवस अर्थात 15 मार्च, 2020 को ***बिहार विधानसभा चुनाव पर रहेगीः बीडीएम की निगाहें*** (पृ-37) शीर्षक से एक अपील की गयी। तेजस्वी बहुजनों की गुलामी को मुख्य मुद्दा बनाकर सर्वव्यापी आरक्षण को एजेंडा बनायें, इसके लिए 8 सितम्बर, 2020 को ***'भविष्य का चुनावी मुद्दाः बहुजनों की मुकम्मल आजादी'*** शीर्षक से एक पोस्ट लिखकर उन तक सन्देश पहुचाने का प्रयास हुआ(पृ. 416)। फिर 23 अक्तूबर, 2020 को लालू जी का 2015 का कारनामा याद दिलाने के लिए ही फेसबुक पर यह पोस्ट डाला- **मुद्दा ऐसा हो कि लोग कमंडल फोड़ने पर आमादा हो जायें** (पृ. 428)। बाद में जब चुनाव का विगुल बज गया 28 अक्तूबर से 12 नवम्बर, 2020 के मध्य 7 बड़े-बड़े लेख लिखा (देखें अध्याय-4) पर, तेजस्वी यादव ने सामाजिक न्याय के मुद्दे से पूरी तरह निर्लिप्त रहे, शायद यह सोचकर कि सवर्ण कहीं नाराज न हो जाएं। किन्तु सवर्णों ने बिहार चुनाव में साबित कर दिया कि लाख कोशिश करके भी कोई उन्हें मोदी से विमुख नहीं कर सकता। बहरहाल बिहार चुनाव में तेजस्वी यादव ने बहुजनों की गुलामी और उनकी आजादी के लिए सर्वव्यापी आरक्षण का मुद्दा न उठाकर एक बड़ा अवसर गँवा दिया है। हिन्दू राष्ट्र के एजेंडे के तहत मोदी जिस तरह बहुजनों को गुलामों की स्थिति में पहुंचा दिए हैंः 1-9 तक गुलामी से मुक्ति ही बहुजनों का सबसे बड़ा

# Continue Your Reading Journey

This preview has ended. Access the complete library and support our mission.

## Join Our Inclusive Reading Community

✓ We champion diverse voices and perspectives

✓ Your support helps amplify underrepresented authors

✓ We provide free access to educational institutions

✓ Building bridges through shared stories

✓ Creating space for all narratives to be heard

## Support Our Mission

Your donation enables us to:

• Curate diverse book collections

• Support authors from marginalized communities

• Provide free resources to educators

• Maintain our accessible digital library

## Visit: www.diversitymission.in

Sign the diversity pledge • Make a donation • Download full library